IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वतंत्रता से पूर्व मैथिली कथा साहित्य

डॉअतुलेश्वर झा

सहायक प्राचार्य, मैथिली विभाग,

हरि प्रसाद साह महाविद्यालय, निर्मली, सुपौल

पृष्ठभूमिः-

आधुनिक कथा साहित्य विश्व वाङ्मय की एक नयी उद्भावना है, जिसकी धारा अनेक रूपों में भारतीय साहित्य के मध्य अखण्ड एवं अजस्र रूप में बह रही है। मैथिली साहित्य में कथा साहित्य की परम्परा प्राचीन काल से ही देखी जाती है। विद्यापति ने अपनी पुस्तक कीर्तिलता को कहानी कहा है, परन्तु जो विस्तार, गम्भीरता एवं सम्मान आधुनिक कथा साहित्य को प्राप्त हुआ है, वैसा सम्मान प्राचीन कथा साहित्य को प्राप्त नहीं हुआ था। मेरे अनुसार इसका मुख्य कारण है इस विधा का जनजीवन के यथार्थ के साथ जुड़ना, जनजीवन के यथार्थ पहलुओं को छूना।

उन्नीसवीं सदी मात्र भारत के इतिहास में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व, खास कर एशिया महादेश के मुल्कों के लिए महत्त्वपूर्ण काल है। क्योंकि पश्चिमी देशों से सम्पर्क के पश्चात् हमारी बौद्धिक विकास में गति आयी, जिससे रूढ़िवादी समाज में एक नया आलोक का प्रकाश हुआ। इन्हीं कारणों से समाज के प्रति बौद्धिक वर्गों में एक नयी विचारधाथरा का जन्म हुआ, जिसके कारण परतंत्रता की बेड़ी मे बंधे हुए लोगों में उससे निकलने की छटपटाहट का अनुभव किया जा सकता है। इस तरह जो चेतना जागृत हुई, उसका प्रभाव भाषा के लेखकों पर भी पड़ा जो तत्कालीन रचनाकारों के रचनाओं में स्पष्ट देखा जा सकता है।

मैथिली कथा साहित्य का विकास क्रमः-

आलोचकों का कहना है कि मैथिली साहित्य में आधुनिक गद्य का आरम्भ महाकवि चन्दा झा द्वारा अनूदित विद्यापति की 'पुरुष परीक्षा' से हुई है। क्योंकि इसी के पश्चात् मैथिली कथा साहित्य में संस्कृत की नीति और शिक्षाप्रद पौराणिक कथा के आधार पर विभिन्न कथाओं का निर्माण के साथ-साथ अनुवाद भी प्रारम्भ हुआ। इस तरह उन कथा साहित्यों के लेखन काल को मैथिली कथा साहित्य का प्रारम्भिक काल या भूमिका काल कहा जाता है। हमें ज्ञात है कि उस समय भारतवर्ष में स्वतंत्रता आन्दोलन चल रहा था, भारतवर्ष के प्रत्येक जनता को उन साहित्यों से जोड़ने के लिए और स्वतंत्रता आन्दोलन को लक्ष्य तक पहुंचने के लिए साहित्य को सबल बनाना जरूरी था। इसके लिए भाषा को विकसित करने की आवश्यकता थी, और उसमें भी सभी क्षेत्र की मातृभाषा को, क्योंकि हमें ज्ञात है कि मातृभाषा में कही गयी बातेँ बहुत ज्यादा ग्राह्य होती हैं। साधारण जनता तक स्वतंत्रता की महत्ता को पहुँचाना अत्यन्त ही जरुरी था, उन्हें इस लड़ाई में अपनी भूमिका को जानना जरुरी था। फलस्वरुप एक तरफ स्वतंत्रता आन्दोलन का बोलवाला था तो दूसरी तरफ मातृभाषा की विकास की धारा- एक आन्दोलन का रूप ले चुका था। मिथिला से बाहर, जैसे काशी, जयपुर, कलकत्ता, आगरा आदि जगहों पर, रह रहे विद्वान भी देश की हलचल से अवगत हो रहे थे। उन लोगों में भी देशप्रेम और देश उन्नति का भाव जाग रहा था, जिसके फलस्वरूप ही उन लोगों के द्वारा मातृभाषा के विकास का कार्य प्रारम्भ हुआ। फलस्वरूप मैथिली भाषा में जयपुर से ' मैथिली हित साधन' (1905), काशी से 'मिथिला मोद'(1906) और दरभंगा से 'मिथिला मिहिर'(1908) आदि पत्रिका प्रकाशित होने लगी।

मिथिला में रह रहे विद्वानों पर भी इस जागरण का प्रभाव पड़ा, और वे भी भाषा के इस आन्दोलन में सक्रिय हो गये। वैसे मिथिला में जो संस्कृत की शिक्षा की परम्परा थी उसमें गिरावट आ गयी थी, संस्कृत को मैथिली में पढ़ाना आरम्भ हो चुका था,जिन्हें वे भाषा कहकर सम्बोधित करते थे। क्योंकि उस समय संस्कृत की पुस्तकों का भी लिपि मिथिलाक्षर ही था। वैसे विद्यापति का सम्मान और आधुनिक युग के प्रथम मैथिली गद्यकार चन्दा झा का यश देखकर मिथिला के विद्वानों में भी अपनी निज भाषा की सेवा की उत्सुकता जगी, जिसके फलस्वरुप मैथिली कथा साहित्य का निर्माण प्रारम्भ हुआ। मैथिली साहित्य के आलोचक डॉ. रामदेव झा का कहना है कि – आरम्भ में मैथिली कथा लेखकों के लिए रचना के दो आदर्श थे- प्रथम संस्कृत परम्परा का आख्यायिका-उपाख्यान, नीति कथा आदि, तथा दूसरा पाश्चात्य परिपाटी के सामाजिक परिवेश पर रचित कथा-उपन्यास। उस समय तक अंग्रेजी या अन्य पाश्चात्य साहित्यों से मैथिली साहित्यकारों का साक्षात् परिचय नहीं हो सका था,परन्तु बंगला साहित्य में पाश्चात्य कथा-उपन्यास का अनुवाद और उससे प्रेरित-प्रभावित अभिनव कथा-उपन्यास विशेष समृद्ध हो बंगाल और बंगाल से बाहर लोकप्रिय हो चुका था। मिथिला और मैथिली का पूर्वोत्तर राज्यों (आसाम और बंगाल)से प्राचीन काल से ही घनिष्ट संबंध रहा है, जिसके कारण मैथिली कथा साहित्य के आरम्भिक कथाओं में बंगला साहित्य का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। हम कह सकते हैं कि इसी के फलस्वरूप मैथिली कथा साहित्य में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। इस तरह देखा जा सकता है कि मैथिली गल्प साहित्य पाश्चात्य साहित्य और भारतीय साहित्य से प्रभावित होकर क्रियाशील हुआ है। इस प्रकार,स्वतंत्रता से पूर्व लिखे गए मैथिली गल्प साहित्य के विकास को दो चरणों में बाँटा जा सकता है-

1. आख्यायिका युग (1889 से लेकर 1916 तक)

2. मौलिक युग (1917 से लेकर 1938 तक)

आख्यायिका युग (1889 से लेकर 1916 ई.) –

मैथिली में आरम्भिक गल्प-साहित्य का आरम्भ संस्कृत के प्रसिद्ध कहानियों के अनुवाद से हुआ। सबसे पहले चन्दा झा ने विद्यापति की कृति ' पुरुष परीक्षा' का अनुवाद किए, उसके पश्चात् म.म.मुरलीधर झा का 'मित्रलाभ हितोपदेश ', महाभारतक अनुशासनपर्व , बाबू क्षेमधारी सिंह का 'शकुन्तला', डा. उमेश मिश्र का 'नलोपख्यान' और 'यक्ष-पाण्डवसंवाद', त्रिलोचन झा का 'उद्योगपर्व', गणनाथ झा का 'आदि-पर्व', आदि कहानियों के अनुवादों का चर्चा किया जा सकता है।वैसे इस अनुवाद परम्परा के बाद जो कार्य हुआ वह अपेक्षाकृत अधिक सफल हुआ। क्योंकि उस समय जो कथा लिखी गई थी वह या तो कोई प्राचीन आख्यान या उस समय की आख्यान सदृश्य कथानक की कथा थी। वैसे यह कहानी घटना प्रधान थे, जिसका उद्देश्य भी पुरुष–परीक्षा जैसा ही था। कहानी में तत्कालीन सामाजिक संदर्भ का विम्ब किनारे पर था। इन गल्पों में तत्कालीन समाज के द्वारा जनजीवन पर कोई प्रभाव नहीं दिखलाई पड़ता, ऐसा कह सकते हैं। वैसे, मैथिली कथा साहित्यों में ये गल्पें अपनी उद्भव काल को परिलक्षित करते हुए महत्वपूर्ण अवश्य है।

मौलिक युगः- (1917 ई. से लेकर 1938 ई. तक)

मैथिली गल्प साहित्य में 'मैथिली हित साधन', 'मिथिला मोद' और 'मिथिला मिहिर' जैसे पत्र-पत्रिका के प्रकाशन के पश्चात ही गल्प विधा का मौलिक लेखन आरम्भ होता है।पहले कह चुका हूँ कि मैथिली साहित्य बंग साहित्य से प्रभावित हुआ था और बंग भाषा में उस समय गल्प एक विशिष्ट विधा हो चुका था। इसी से प्रभावित होते हुए मैथिली साहित्य में गल्प लेखन की परम्परा का विकास हुआ। आलोचकों का मानना है कि मैथिली में सर्वप्रथम मौलिक गल्प का लेखन जनसीदन जी का 'ताराक वैधव्य' से हुआ क्योंकि इसी गल्प के पश्चात् मैथिली गल्प साहित्य आख्यान युग से निकल कर समाजोन्मुख हुआ। गल्प साहित्य के लिए जिस–जिस तत्त्व की आवश्यकता होती है सभी तत्त्व इस गल्प में विद्यमान है। इस गल्प के प्रकाशन के पश्चात वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु' का गल्प जैसे – भूमिक दूत बेङ, भीम ओ ऐरावत, लोभीक नारिकेर, निनानबेक फेरि, बुढ़ियाक लाल, धर्कट ओ मर्कटक कथा एवं हंस ओ कौआक पंचैती , आदि कथाएँ मैथिली गल्प में एक नवीन परिपाटी का श्रीगणेश करता है।

वैसे आलोचकों का मानना है कि मैथिली गल्प साहित्य में मौलिक लेखन के इस युग में दो बातें देखी जाती हैं। पहला मैथिली गल्प साहित्य एक ओर जहाँ समाजोन्मुख हो गया तो दूसरी ओर मैथिली गल्प साहित्य में भाषा और शिल्प दोनों का विकास हुआ। क्योंकि आरम्भिक मैथिली कथाओं मे तत्सम शब्दों का प्रयोग किया जा रहा था, उसके स्थान पर देशज शब्दों का प्रयोग होने लगा।

इस तरह मैथिली गल्प साहित्य के विकास को भी दो चरणों में बाँटा जा सकता है- पहला 1917 ई. से 1930 ई. तक और दूसरा 1930 ई. से 1938 तक। पहले चरण में मैथिली गल्पकार अपनी गल्प में सामाजिक जीवन की बात कहना प्रारम्भ किए। इसका तात्पर्य यह है कि मैथिली गल्प साहित्य समाजोन्मुखी हुआ , और गल्प में समाज में फैली कुरीतियों को मैथिली गल्पकार प्रकाश में लाने का प्रयास आरम्भ करने लगे। इन गल्पकारों में जनार्दन झा 'जनसीदन', वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु', काली कुमार दास, रास बिहारी लाल दास, कुमार गंगानन्द सिंह आदि को रखा जा सकता है। इनमें 'भीषण अन्याय'(1923 ई.) , 'कमला' (1929 ई.) , 'गंगा स्नान'(1929 ई.) और 'अदलाक बदला' , कुमार गंगानन्द सिंह का 'मनुष्यक मोल' (1924 ई.) , 'विवाह' (1924 ई.) , रमाकान्त ठाकुर का संवादात्मक गल्प 'नूतन मिथिलोपाख्यान'(1930 ई.)आदि गल्पों में सामाजिक कुरीति, जैसे बाल विवाह, बेमेल विवाह, बहु विवाह आदि देखे जा सकते हैं। इस प्रकार कह सकते हैं कि गल्प में विरोध तो था किन्तु सामाजिक सौमन्यस्यता भंग नहीं हो इसका डर हमेशा बना रहता था। सामाजिक यथार्थ का चित्रण तो किया गया, किन्तु उन कमजोरियों का विरोध नहीं किया गया। अतः मेरा मानना है कि यह गल्प मौलिक युग के विकास का गल्प है।

किन्तु यही वह समय था जब मैथिली गल्प करवट ले रह था, विश्व जगत से वह परिचित हो रहा था, मिथिला में लोग अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करना प्रारम्भ कर रहे थे और वे सभी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ चुके थे। इसी का परिणाम हुआ कि मिथिला के केन्द्र दरभंगा में वर्षों से जड़ जमायी सामंती प्रथा के विरोध के क्रम में 1930 ई. में दरभंगा राज के विरुद्ध किसान आन्दोलन आरम्भ हुआ। उसी तरह मैथिली गल्प भी समाजोन्मुखी से होते हुए वैश्विक सोच की ओर बढ़ गया। उसी का परिणाम था दरभंगा राज से ही प्रकाशित हो रही मिथिला मिहिर में इन स्वरों का स्थान मिलना। सामंती प्रथा के कारण मिथिला के लोग कुरीति और परम्परावाद के पाँव तले दबे थे और गल्पकारों ने उसी को गल्प की विषय वस्तु बनायी। एक ओर मिथिला में राजनीतिक जागरण आ रहा था तो दूसरी ओर लोगों में बोध अस्मिता का भी आभास होने लगा और वे सजग होने लगे, जिसके फलस्वरुप मैथिली भाषा के उत्थान की ओर भी लोगों की नजरें गई, फलतः मिथिला में भी मैथिली साहित्यकारों का उदय होने लगा और सबसे प्रभावशाली विधा गल्प की रचना का आरम्भ। इस समय के जो रचनाकार हुए उनमें श्रीबल्लभ झा, पं. श्यामसुन्दर झा, श्याम सुन्दर झा 'मधुप' , हरिन्नदन ठाकुर 'सरोज', शारदानन्द ठाकुर , जय नारायण मल्लिक, लक्ष्मीपति सिंह और कुलानन्द नन्दन , भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', काञ्चीनाथ झा 'किरण' आदि।

इन कथाकारों का पहला उद्देश्य सामाजिक यथार्थ को गल्प में चित्रित करना था और दूसरा भाषा की जटिलता को मुक्त करना, जिससे मैथिली साहित्य का ज्यादा से ज्यादा विकास हो सके। क्योंकि भाषा की महत्ता को स्थापित करना भी इनका एक लक्ष्य था, अतः कह सकते हैं कि सम्पूर्ण भारत वर्ष में इस भावना का संचार सभी भाषा-भाषी में हो चुका था। इसी परिपेक्ष्य में जिन–जिन गल्पकारों ने अपनी गल्प की रचना की, उनमें श्यामानन्द झा 'रेवा'1931 ई.; शारदानन्द ठाकुर 'तारा' 1932 ई.; भुवन 'अपनेक हास्य' 1925 ई.; 'गौरी' 1937 ई.; किरण 'करुणा' 1937 ई.; 'ऐ चारि खूनकें खोज कैनिहार के?' 1938 ई. आदि गल्पकारों ने अपनी गल्प में मिथिला की सामाजिक, वैश्विक राजनीतिक परिवर्तन के स्वर को स्थान देने लगे जिसके परिणाम स्वरूप मैथिली गल्प साहित्य में एक नये युग का सूत्रपात हुआ।

अतः कह सकते हैं कि मैथिली गल्प साहित्य जो 1889 में संस्कृत भाषा के अनुवाद, आख्यान से अपनी यात्रा आरम्भ की, वह 1938 ई. तक आते- आते समाजोन्मुखी और वैश्विक विचारधारा से जुड़ गया और मैथिली गल्प साहित्य में एक हलचल आया। जिसके फलस्वरूप मैथिली कथा साहित्य की जो धारा चली, वह भारतीय स्वतंत्रता से पूर्व अपनी एक अलग पहचान बना ली और मैथिली कथा साहित्य में उन स्वरों का समागम हुआ जो वैश्विक हो चुका था । जिसके परिणामस्वरूप मैथिली कथा में सुधारवादी प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। स्वतंत्रता आन्दोलन, प्रगतिवादी विचारधारा के प्रचार-प्रसार तथा जन जागरण के फलस्वरूप गाँधीवादी और मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित कथा लोकप्रिय होने लगी, साथ ही साथ नव शब्दावली, नव वाक्य विन्यास और कथन की नयी शैली का आविष्कार और विकास भी हुआ। जिसके पश्चात मैथिली गल्प साहित्य भारतीय गल्प साहित्यों के बीच अपनी एक अलग पहचान बना पाया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः-

मैथिली साहित्यक इतिहास, ले. डॉ.जयकान्त मिश्र, प्रकाशक, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।

कर्मधारय, ले.डॉ. तारानन्द वियोगी, प्रकाशक, संकल्प लोक, सुपौल, बिहार।

बदलैत स्वर, ले. डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास, प्रकाशक, नवरंग, पटना, बिहार।

मैथिली साहित्यक इतिहास , ले.डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश, प्रकाशक, भवानी प्रकाशन, दरभंगा, बिहार।

मैथिली पत्र- पत्रिका, संपादक- मोहन भारद्वाज, प्रकाशक, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ।

कथा-संचयन, संपादक- डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास, प्रकाशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

देसिल बयना, संपादक- डॉ. तारानन्द वियोगी, प्रकाशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।